International Online Multidisciplinary Journal
Review of Research
Save Tree, Save Paper, Save World
ISSN No : 2249-894X
Impact Factor 2.1002 (UIF) [Yr.2013]
3.1402 (UIF) [Yr.2014]

ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402 (UIF) Volume - 5 | Issue - 4 | Jan - 2016

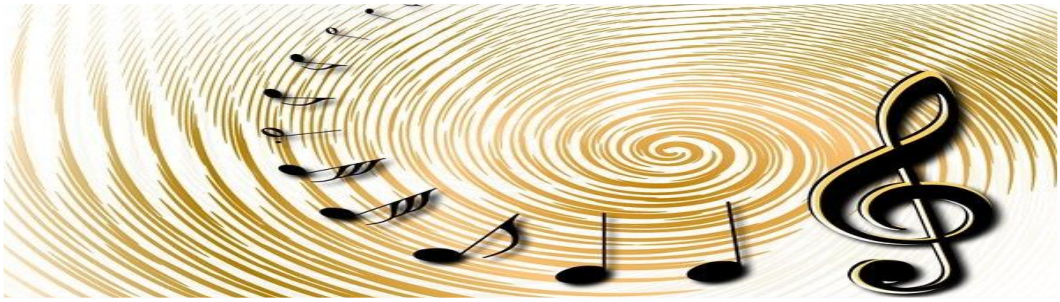

नेत्रा श्रीकांत तेल्हारकर

वैज्ञानिक प्रगती द्वारा संगीत क्षेत्र की उपलब्धियाँ

नेत्रा श्रीकांत तेल्हारकर

जे.डी. पाटील सांगळूदकर महाविद्यालय, दर्यापूर.

प्रस्तावना :-

बीसवी शताब्दी को विज्ञान एवं तकनिकी का युग कहा जाता है। इस शती में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे त्वरित गति से हुए परिवर्तनों को स्पष्ट देखा जा सकता है। राजनितिक गतीविधियों के कारण एक तरफ देश राष्ट्रीयता के दौर से गुजर रहा था वही दूसरी ओर इन गतिविधीयों में सांस्कृतिक, सामाजिक वा शैक्षणिक परिस्थितीयाँ प्रभावित हो रही थी। सांस्कृतिक, शैक्षणिक दृष्टि से अनेक परिवर्तन हुए किन्तु वैज्ञानिकता के कारण हुए परिवर्तनों को इस शती की महान देन कहा जाएगा।

वैज्ञानिकता ने जहाँ एक ओर मनुष्य के जीवन के सम्भावित सामान्य पक्षों को प्रभावित किया वही भारतीय संस्कृति एवं कला को भी प्रभावित किया। अर्थात संगीत कला भी उसके प्रभाव से छुटी नही। संगीत के क्षेत्र मे वैज्ञानिक प्रभाव के कारण प्रचार-प्रसार के साधन, मुद्रण प्रणाली की सुविधा अनेक वैज्ञानिक उपकरण जैसे ग्रामोफोन, माइक्रोफोन, आकाशवाणी, कैसेट्स, टेपरेकॉर्डर, टेलीविजन, विडीओ, सिन्टेसाईजर और कॉम्पॅक्ट डिक्स आदी से संगीत के शास्त्र एवं क्रियात्मक दोनों पक्षों को समृद्ध बनाने में अत्यंत सहयोग मिला। जिससे संगीत की शिक्षा प्रदर्शन सभी कुछ प्रभावित हुए तथा संगीत कला धराने के सिमित दायरे से निकलकर जनसाधारण तक पहुँची।

उद्देश :-

परीस्थिती नुसार बदल यह निसर्ग नियम है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में धरानों का अभ्यास करते समय विभिन्न घरानों की गायकी प्राप्त करने हेतू उस घराने के गुरू सन्मुख शिष्य को अपना ज्ञान इस हेतू शास्त्रीय संगीत के विकास म वैज्ञानिकता ने क्या भूमिका निभाई तथा वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा व्यवहारिक पक्ष किस प्रकार प्रभावित हुआ, उसके फलस्वरूप क्या क्या परिवर्तन अब तक हुए इन सब तथ्यों के ज्ञान को संकलित करके उक्त विषय पर कार्य करना उपयुक्त समझा गया।

विस्तार :-

इस शताब्दी के बारे मे सोचते हुए यह कह सकते है की शताब्दी के पूर्वार्ध मे संगीत की शिक्षा ऐक गुरू शिष्य परंपरा का आदर्श थी। अर्थात गुरूमुखी विद्या का ही महत्व था। वही शनै: शनै: वैज्ञानिक उपकरणों के आविष्कार से तर्ा संगीत के क्षेत्र मे अनेक

प्रयोग से एक नया मार्ग उपलब्ध हुआ। जिस ने एक ओर कलाकार के मंच प्रदर्शन को प्रभावित किया वही दुसरी ओर उनकी शिक्षा-दिक्षा पर भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना प्रभाव डाला। शुरू मे शास्त्रीय संगीत के बारे मे जब सोचते है, तब जाति, ग्राम, मुर्च्छना से प्रबन्ध, प्रबन्ध से धृपद और ख्याल से शैली समय के साथ अवश्य परिवर्तित हुई किन्तू शास्त्रीय संगीत की आत्मा मे कोई परिवर्तन नही हुआ। साथ ही गुरूशिष्य परंपरा भी कायम रही। परंतू वर्तमान वैज्ञानिकता के संदर्भ मे शास्त्रीय संगीत के अध्ययन से जो महत्वपूर्ण तथ्य ज्ञात हुए उनमे शास्त्रीय संगीत की गुरूशिष्य परंपरा अपना मुल रूप खो बठी है। दुसरी ओर वैज्ञानिक उपकरणों की सहाय्यता से गुरूमुख से सिखने की विद्या का एक सुलभ मार्ग शिष्य गणों ने स्विकार किया जैसे की पुस्तकों की सहाय्यता से, कॅसेट्स, टी.व्ही., व्हिडीओ, रेडीओ की सहाय्यता से अपने मनपसंद कलाकार की कला प्रस्तूती का अनुकरण या श्रवण कर अपनी गायकी को बढाने का प्रयास करते है। इसका फलस्वरूप कठोर श्रम, मिष्ठा गुरू के व्यक्तित्व मे परिलखित होने लगा है।

वैज्ञानिकता के अनुसार माईक्रोफोन और ध्वनी प्रक्षेपण की सहाय्यता से कलाकार के मंचप्रदर्शन मे बदलाव नजर आने लगा है। शास्त्रीय संगीत का एक एक राग गाते समय, समय की पाबंदी न हो, परंतू कलाकार को आयोजक की इच्छानुसार आधे घंटे मे ही समाप्त करना पडता है। ऐसे मे कलाकार की उत्कृष्ट कला व्यवसायिकता से बंध जाती है। तथा मन की बात मन मे ही रह जाती है। तो दुसरी तरफ हजारो श्रोताओं के बीच जो उसे सन्मान मिलता है, रेडिओ, टी.व्ही. तथा देश विदेश में उनकी कला का जो प्रचार-प्रसार होता है, उसका मोह भी वह नही छोड पा रहा है।

कहने का तात्पर्य यह है कि वैज्ञानिक उपकरणों ने कला के क्षेत्र को बहुत अधिक विस्तृत कर दिया है। कलाकार अपनी कला से धन और यश की उपलब्धि के मोह मे अधिक बह गया है। कलाकार का त्यागमय, तपस्यामय सात्विक व्यक्तित्व खोने लगा है। उभरते कलाकारों को भी कम समय मे मंच प्रदर्शन और प्रसिद्धी का हव्यास होने लगा है।

इस युग मे शास्त्रीय संगीत का क्षेत्र अधिक विस्तृत हुआ है। देश विदेश मे भी इस संगीत कला के प्रेमी, शिष्य गुण इससे आनन्द प्राप्त कर रहे है और सिखने का अथक प्रयास कर रहे है। विदेशों मे संगीत संस्थाएँ जैसे अली अकबर खाँ द्वारा कॅलीफोर्निया मे स्थापित अली अकबर खाँ कॉलेज ऑफ म्युझिक, ऐसी अनेक संस्थाऐं भी वैज्ञानिक उपलब्धि का ही परिणाम है। बडे से बडे समुह मे कलाकार को सुनना, माईक्रोफोन, प्रकाश व्यवस्था तथा मंच व्यवस्था के कारण सुलभ हुआ है। माईक्रोफोन की व्यवस्था से तंत्र वाद्यों के सुक्ष्म कार्य अभिव्यक्त होते है तथा गायक कलाकार गले से सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को भी श्रोता तक पहूँचा देते है। किशना घराने के गायक स्वर की बुलंदी पर नही, स्वर के माधुर्य पर बल देते है और यह बात माईक्रोफोन के जरिए अधिक निखार कर सामने आती है। आज कलाकार खुद की अपने आप को सुनकर, समझकर तथा अपने गुरू के आदेश नुसार अपनी साधना का परिमार्जन कर सकता है। इस तरह वैज्ञानिक प्रगती के कारण रिकॉर्ड, रिकॉर्ड प्लेअर के आने से विद्यार्थीयों को सुविधा प्राप्त हुई है। किसी भी बडे गायक वादकों को वे जब चाहे सुन सकते है। विद्युतिय वाद्यों जैसे तबला, तानपूरा, इ. के आविष्कार से संगीत सिखनेवाले विद्यार्थीयों को स्वतंत्र रियाज करते समय इसकी मदत मिलती है। तथा कलाकारों को भी इसकी मदत मिलती है।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकालना अनुचित न होगा कि वैज्ञानिकता के नकारात्मक प्रभाव से ही शास्त्रीय संगीत को बहुत अधिक हानि हुई है। क्यों की परिस्थितीनुरूप बदलाव यह नैसर्गीय नियम है। आज की इस बीसवी शती के युग मे विज्ञान और कम्प्युटर की सहाय्यता से अनेक परिवर्तन हुए है उससे संगीत कैसे छुटेगा ? इसमे वैज्ञानिकता का समारात्मक प्रभाव विशेष योग्यता रखता है। वैज्ञानिकता ने शास्त्रीय संगीत की दिशा में अपना जो भी प्रभाव डाला है उससे परिवर्तन तो अवश्य हुआ है। परंतु उससे गुणात्मक उपलब्धि भी मिली है। वैज्ञानिकता की सबसे बडी उपलब्धि यह है की वह प्रचार-प्रसार के माध्यमों द्वारा जिसे चाहे उसे श्रेष्ठ कलाकार के रूप में प्रसिद्धि दिला सकते है। क्यों की बहुतसे कलाकार श्रोताओं व प्रशंसकों तक पहूँचने से वंचित रह जाते है। सकारात्मक दृष्टि से प्रचार प्रसार के माध्यम उसे श्रोताओं, प्रशंसको के दबृहद् समुह से परिचित कराते है तथा विविध कार्यक्रमों से जा उसे प्रशंसा प्राप्त होती है, उससे उस मानसिक संतुष्टि व कलात्मक प्रेरणा प्राप्त होती है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. संगीत चिंतामणी- आचार्य बृहस्पती
२. संगीत कला विहार अंक

३. संगीत (मासिक)
४. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग- अनिता गौतम
५. आकाशवाणी और हिन्दुस्थानी संगीत